निष्कलंकिनी

अंगिका खण्ड काव्य

निष्कलंकिनी कैकेयी जे, कर के अद्‌भुत काम
बनैलकै श्री रामचन्द्र कें, पुरूषोत्तम श्री राम

हीरा प्रसाद 'हरेन्द्र'

अंगदेश. कॉम के लेखनी
सप्रेम भेंट ।
हरेन्द्र
6.XII.2023

निष्कलंकिनी

(अंगिका खण्ड काव्य)

महाकवि

हीरा प्रसाद 'हरेन्द्र'

चन्द्रकांता प्रकाशन

कृति : **निष्कलंकिनी**

(अंगिका खण्ड काव्य)

कृतिकार : हीरा प्रसाद 'हरेन्द्र'

ग्राम+पो० - कटहरा

सुलतानगंज (भागलपुर) 813213

मो० : 9931854246

सम्प्रति : अवकाश प्राप्त प्रभारी प्रधानाध्यापक,

महामंत्री, अखिल भारतीय अंगिका साहित्य कला मंच

सर्वाधिकार ©

प्रकाशन तिथि : 2017 ई० वि० संवत् - 2074

शब्द संयोजन : श्री तारा गीता प्रिंटिंग प्रेस

व मुद्रण : खलीफाबाग चौक, भागलपुर

आवरण : पप्पू पाल

प्रकाशक : चन्द्रकांता प्रकाशन

सहयोग राशि : 100/-रू०

NISHKALANKINEE
By Hira Prasad 'Harendra'

समर्पण

(02.01.1946 से 18.07.2016)

ममता की मूर्त्ति, दया की देवी, आत्मीयता के सागर, अध्यापन कार्य निपुणा, हीरा कें हीरा के दर्जा दिलावै वाली, सात संतानों की जननी आरू वकील प्रसाद सिंह के द्वारा भरलों माँग के शोभा चिता तक साथ लें जाय वाली, स्नेहमयी शकुन्तला कें सादर सप्रेम.....

हरेन्द्र

एक –दू बात

धर्मशास्त्र के पन्ना-पन्ना में महिला के वनिस्पत पुरुष वर्ग के प्रधानता समैलों छै। नारी के उज्ज्वल व्यक्तित्व आरू कृतित्व कें मटियामेट करै के प्रयास होलौं छै। "नारी यत्र पूज्यते, रमन्ते तत्र देवता", 'मही कें हिलाय दै वाली महिला' सब सूक्ति महिला सें काम लै घरी प्रयोग करलों जाय छै। 'ढोल, गँवार, शूद्र, पशु, नारी' सें लैं कें 'नारी स्वभाव सत्य कवि कहहि। अवगुण आठ सदा उर रहहीं' तुलसी बाबा के ई चौपाई नारी कें कूप-मण्डुक बनाय कें राखी देनें छै। तभी तें आय नारी जागरण, नारी उत्थान, नारी सशक्तीकरण, अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस, महिला कल्याण दिवस अहिनों संस्था आरू उत्सव आयोजन के आवश्यकता पड़ी गेलै। नारी कें ज्ञार्नाजन, शिक्षा, सम्पत्ति के अधिकार सें बंचित राखलों गेलै।

जंगल के साम्राज्ञी ताड़का पर्यावरण के रक्षा लेली जंगल कें उजाड़ै वाला सन्त-महात्मा कें यज्ञ में लकड़ी जलावै सें रोकै छेलै, मगर यज्ञविध्वंशकारणी के रूपों में ओकरों वध करलों गेलै। महाविदुषी महिला होलिका विज्ञान वेतृ छेलै। जे चादर ओढ़ी कें आग में बैठी गेला पर आग, जलाबें नैं पारै रहै, ऊ चादर निर्माण में होलिका कें महारत हासिल छेलै। ईश्वर भक्ति में लीन होलिका भक्त प्रल्हाद कें बचाबै लेली प्रह्लाद के देहों पर चादर डाली कें अपनें जली कें स्वाहा होय गेलै। मगर कलमकार कें ई गँवारा नै, उल्टे ईश्वर भक्त के जलाबै के पाप होलिका के माथा पर मढ़ी देलों गेलै।

कैकेयी वीरांगना छेलै। युद्धभूमि में अचेत पड़लों राजा दशरथ कें विजय प्राप्त करी विजय माल पहराबै वाली कैकेयी राम के आग्रह पर राम के अविर्भाव के सार्थक बनाय लेली नाटक रचलकै ऊ नाटक के पर्दा उठला में ही साधु-संत, ऋषि-मुनि-ज्ञानी रावण के आतंक सें परित्राण पैलकै। भूमि के भार

हल्का होलै। शांति के साम्राज्य छैलै आरू रघुवंशी राम कुल के मर्यादा जोगतें होलोॅ महामानव कहलैलै।

अपना-अपना घरोॅ मेॅ कोय व्यक्ति कोय तरह के पूजा-पाठ यज्ञ चाहे कोनों अनुष्ठान करै छै तेॅ अपनों जन-परिजन, सगा-संबंधी केॅ संभवतः बोलावै के प्रयास करै छै। राजा दशरथ राम के राज्याभिषेक अहिनों पावन अनुष्ठान मेॅ भरत आरू शत्रुघ्न केॅ ननिहाल सें बुलाना उपयुक्त नैं समझलकै। भरत के नाना आरू राजा जनक केॅ आमंत्रण भेजलोॅ नैं गेलै। ई सब बातोॅ पर केकरो ध्यान नैं, कैकेयी के नाटकीय वरदान केॅ सर्वोपरि बनाय अहिनों बदनाम करलोॅ गेलै कि दू-चार सौ गामों मेॅ घूमी देखोॅ,कोय अपनों बहिनी या बेटी के नाम कैकेयी तेॅ राखै नैं पारै।

रामचन्द्र सें विचार -विमर्श के बात नैं रहतियै तेॅ भरत लेली राजगद्दी तेॅ कैकेयी आसानी सें मांगेॅ पारै रहै, कहिनें कि उनकोॅ पिताजी तेॅ राजा दशरथ सें शादी यही शर्त्त पर करनें छेलै कि कैकेयी सें उत्पन्न संतान ही राजगद्दी के हकदार होतै। राम चरित मानस' मेॅ राम केॅ केन्द्र मेॅ राखी हर मर्यादित कामोॅ केॅ रूपायित करलोॅ गेलोॅ छै। रामेश्वरम् मेॅ शिवलिंग के स्थापना लेली राम के साथ सीता के गठबंधन अनिवार्य समझी रावण द्वारा सीता केॅ साथ लानी कार्य केॅ अंजाम देना, मरनासन्न रावण के पास राम के द्वारा नीति सीखै लेली, लंक्ष्मण केॅ भेजना, रावण के महानता सिद्ध करै वाला ई बातोॅ केॅ नजर अंदाज करना रचनाकार आवश्यक समझलकै जहाँ तक वनवास के बात छेकै, राम के साथ छेलै। "जीव बिनु देह नदी बिनु वारि,वैसहि नाथ पुरूष बिनु नारी" कही केॅ लाख समझैल्हौ पर सीता जंगल जाय से अपना-आप केॅ नैं रोकेॅ पारलकै। विशेष आग्रह पर ही सही लक्ष्मण भी साथ नैं छोड़लकै। राजा दशरथ राम के बिना नैं रहेॅ पारतियै, ई सोची केॅ जंगल हुनियों चल्लोॅ जैतियै। दू - बेटा आरू पुत्रबधू साथें जंगल मेॅ मंगल मनैतियै। श्रवण कुमार के प्रसंग मेॅ शाप के बात कहलोॅ जाय तेॅ कुच्छू दिन के लेली शाप आरू टलतियै। लक्ष्मण केॅ शक्ति वाण लगला पर विलाप के क्रम मेॅ राम कहै छै - 'जों जानतहुँ वन बंधु बिछोहू पिता वचन मानतउ नहीं सोउ', हमरा जानतें रामचरित मानस के कोनो चौपाई मेॅ राजा दशरथ अपनाँ

मुँहों सें राम कें वनवास जाय लेली नैं कहनें छै। राम तें आपनों अवतार के सार्थकता लेली सब सोची-समझी कें करनें छै। हम्में यहें सच्चाई कें तुलसी बाबा के उक्ति 'मति अनुरूप राम गुण गाऊँ' सें प्रभावित होय कें मति के अनुरूप कैकेयी के चरित्र कें निष्कलंकिनी के रूपों में प्रस्तुत करै के प्रयास करनें छियै। स्वर्गीय परमानंद पाण्डेय के धर्मपत्नी स्वर्गीया वागीश्वरी देवी पाण्डेय तें परमा अंगिका' में शताधिक रामायण के नामों के उल्लेख करनें छै। कुछ तथ्यों के भिन्नता सब में समैलों छै। स्वर्गीय उमेश जी नें 'कैकेयी के अन्तर्द्वन्द' में कैकेयी के उज्ज्वल पक्ष कें समाज के सामने बहुत पहिन्हैं लाननें छै। उनकों संदर्भ ग्रंथ आरू खोज ही हमरों लेखनी कें अधिक बल देलकै। उनका प्रति आभार व्यक्त करै छियै। आभारी तें छियै तुलसी दास सें लें कें हौ सब्भे रचनाकारों के जौनें सिनी एकरा संबंध में कुच्छू - कुच्छू लिखनें छै। एतनें नैं आभारी तें छिये डॉ० ब्रह्मदेव नारायण सत्यम के सम्यक विचार आरू वकील प्रसाद सिंह के प्रकाशन में सहयोग लेली भी।

अंततः पाठकों सें जों कुछ कहना छै तें यहें कि पाठकगण अन्तर्यामी होय छै। हों, एक बात जरूर बोलबै कि पाठक के हस्तक्षेप कहिनों हुवें? निवेदन एतनें छै कि मधुमक्खी कभी फूलों कें डंक नैं मारै छै। बिना फूलों कें नुकसान पहुँचैनें वें ओकरा सें ऊ निकाली लै छै, जे ओकरा चाही। पाठक के बर्ताव कुछ अहिनें हुवें ते अहोभाग्य! अतः पाठक के प्रतिक्रिया आरू जबरदस्त हस्तक्षेप के प्रतीक्षा में:

हरेन्द्र

❖❖❖

सर्ग के सार

पहला सर्ग : विषय प्रवेश, देश महिमा, नारी के रूप, नारी उपेक्षा।

दूसरा सर्ग : कैकेयी - दशरथ विवाह (शर्त्त के साथ), देवासुर संग्राम, कैकेयी द्वारा जीत हासिल, वरदान, थाती।

तीसरा सर्ग : दशरथ के घर चार पुत्र, विश्वामित्र के यज्ञ, अहिल्या उद्धार, धनुष भंग, विवाह, राज्याभिषेक प्रस्ताव।

चौथा सर्ग : राम द्वारा कैकेयी माता सें वरदान माँगै लेॅ प्रेरित, आनाकानी, कठोर वचन, वरदान लेॅ तैयार।

पाँचवाँ सर्ग : रानी के कोप भवन मेॅ जाना, राजा पर जादू के डोर, राजा वरदान दैलेॅ तैयार, भरत केॅ राजगद्दी, राम केॅ वनवास के माँग।

छठा सर्ग : दशरथ के दयनीय दशा, सुमित्र आरू राम के आना, कारण जानना, जंगल लेॅ तैयार होना।

सातवाँ सर्ग : अयोध्या मेॅ शोक, तापस भेष मेॅ राम-लखन सीता के वन गमन।

आठवाँ सर्ग : दशरथ के स्वर्गवास, भरत के अयोध्या आना, कैकेयी पर क्रोध, दाह संस्कार।

नौवाँ सर्ग : राम के वन सें लौटना, सब सें मिलना, भरत से माता कैकेयी को माता कहवाना, उपसंहार।

❖❖❖

कैकेयी
सर्ग–एक

धर्म भूमि ई भारत छेकै,
धर्म सदैव महान।
ईश्वर के अवतार यहीं पर,
गाबै वेद-पुराण।। 1।।

धरती पर के अन्यायी सब,
ऊपर भोगै दण्ड।
ऊपर जे अन्याय करै छै,
टूटै यहाँ घमण्ड।। 2।।

गंगा अहिनोॅ पतित-पावनी,
नैं रहलै अपवाद।
धर्म ग्रंथ उलटाबोॅ आरू,
करोॅ कहानी याद।। 3।।

पाप-ताप सें तप्त धरा पर,
नारी के छै मोल।
जकरोॅ बस अपमानें देथौं,
जीवन मेॅ विष घोल।। 4।।

पढ़ोॅ महाभारत-रामायण,
नारी के पहचान।
जकरा खातिर युद्ध भयंकर,
सब्भैं लेभो मान।। 5।।

सरस्वती, लक्ष्मी तेॅ नारी,
नारी दुर्गा माय।
नारी के रूपोॅ मेॅ राधा,
पराशक्ति कहलाय।। 6।।

जहाँ-जहाँ नारी के पूजा,
वहाँ बसै भगवान।
धर्मशास्त्र के पन्ना पलटोॅ,
लिखलोॅ ई अख्यान।। 7।।

तइयो उपेक्षिते छै नारी,
देखोॅ कोनों ग्रंथ।
झाँपी-पोती केॅ बतलैथों,
तोरा भले महंथ।।8।।

कृष्ण - सुदामा साथ पढ़लकै,
सांदीपन लग जाय।
कौरव - पाण्डव भी शास्त्रों में,
द्रोण शिष्य कहलाय।। 9।।

रामचन्द्र चारो भाई लें,
छेलै गुरु वशिष्ठ।
शास्त्र बताबै जकरा वश में
रहै सर्वदा इष्ट।। 10।।

नारी लेली नै विद्यालय,
नैं आश्रम झलकाय।
कहाँ करलकै ज्ञानोपार्जन,
जरा समझ नैं आय।। 11।।

कैकेयी भी नारी छेलै,
उनकों अद्भुत काम।
होलै लेकिन ई धरती पर,
बढ़िया सें बदनाम।। 12।।

सब्जी में कदीमा बातरों,
अन्नों बीच कलाय।
कैकेयी नारी में वैसें,
ठीक समझलों जाय।। 13।।

गाँव-मुहल्ला घूम्हो सगरे,
धिया पुता के नाम।
कैकेयी भूल्हौं नैं राखै,
कहिनों छै बदनाम।। 14।।

ऊ कैकेयी के करनी कें,
समझों - बूझों भाय।
जौनें रामों के कामों कें,
धरती पर चमकाय।। 15।।

सार्थक जन्म बनाबै जौनें,
राखी शीश कलंक।
ऊ नारी नैं नारी छेलै,
तारा बीच मयंक।। 16।।

बनै महामानव; मानव सें,
कौशल्या के लाल।
बदनामी के टीका देखों,
कैकेयी के भाल।। 17।।

रावण वध के लेली जानों,
रामों के अवतार।
इन्द्रासन डोलाबै छेलै,
जकरों अत्याचार।। 18।।

ऋषि-मुनि-ज्ञानी दर्शन पाबी,
गेलै भव सें पार।
खोजी-खोजी धरती पर के,
पाप करलकै क्षार।। 19।।

ई सब केना संभव छेलै,
राम करतियै राज।
काम करतियै बाधित सब्भे,
माथा पर के ताज।। 20।।

कठिन समस्या दूर करलकै,
कैकेयी के चाल।
जकरा खातिर रामचन्द्र भी,
रहै सदा बेहाल।। 21।।

ऊ कैकेयी माता केरोॅ,
रामें पूजै गोड़।
जौनें लानै रामचन्द्र के,
जीवन में कुछ मोड़।। 22

❖❖❖

सर्ग–दू

कैकेय देश के राजकुमारी,
कैकेयी के चाल।
देखी-देखी लट्टू छेलै,
राजा अज के लाल।। 1।।

विन्दुमती अज दोनों प्राणी,
जानै जखनी बात।
शादी के प्रस्ताव पठाबै,
तत्क्षण रातो-रात।। 2।।

दशरथ के मन पुलकित होलै,
जानी कें प्रस्ताव।
पर कन्या पक्षों सें ऐलै,
अनुचित एक सुझाव।। 3।।

शादी होना संभव बिल्कुल,
जों नैं हुवें मलाल।
दशरथ के उत्तराधिकारी,
कैकेयी के लाल ।। 4।।

दोनों पक्षें समझी-बूझी,
शर्त्त करै स्वीकार।
दशरथजी के गल्ला शोभै,
कैकेयी के हार।। 5।।

कौशल्या, कैकेयी आरू,
प्रिया सुमित्रा साथ।
राजा दशरथ खूब बँटाबै,
राज-काज मेॅ हाथ।। 6।।

देवासुर संग्राम पसरलै,
धनुष-वाण लेॅ हाथ।
राजा दशरथ समर भूमि मेॅ,
कैकेयी भी साथ।। 7।।

लड़तें-लड़तें मूर्छित होलै,
दशरथ जी निस्तेज।
कैकेयी नैं भोगै वाली,
फूलोॅ केरोॅ सेज।। 8।।

असुरोॅ सें संग्राम करलकै,
रूप धरी विकराल।
समर भूमि मेॅ नाचेॅ लगलै,
असुर दलोॅ के काल।। 9।।

देवासुर संग्राम जितलकै,
दशरथ केॅ जयमाल।
राजा दशरथ गद-गद होलै,
बोलै होश सम्हाल।। 10।।

माँगोॅ - माँगोॅ रानी माँगोॅ,
हमरा सें वरदान।
तोरा सें हमरोॅ छै अखनी,
धरती पर सम्मान।। 11।।

'हर बढ़िया कामोॅ के लेली,
जों चाहौं वरदान।
राजा के रानी कहलाबौं,
झूठा ई अख्यान'।। 12।।

'नैं-नैं अहिनों बात यहाँ नैं,
मन मेॅ छै उल्लास।
सोची समझी अखनी माँगोॅ,
हमरा सें कुछ खास'।। 13।।

'बात यहेॅ छै ठीक अगर तेॅ,
थाती तोरा पास।
वक्त अगर कुछ ऐलै अहिनों,
माँगी लेबै खास'।। 14।।

सुनथैं राजा हर्खित होलै,
कैकेयी खुशहाल।
आगू देखोॅ की लिखलोॅ छै,
दोन्हूँ केरोॅ भाल।। 15।।

❖❖❖

सर्ग–तीन

चौथापन में राजा दशरथ,
पैलक सब संतान।
चारो पुत्रों बीचें छेलै,
दशरथ जी के प्राण।। 1।।

विनय, शील, गुण निगुण लखाबै,
दशरथ के सब लाल।
शास्त्र बताबै चारो छेलै,
कालों केरों काल।। 2।।

विश्वामित्र महामुनि छेलै,
ज्ञानों के मर्मज्ञ।
जहिया-जहिया करना चाहै,
जंगल में जब यज्ञ।। 3।।

राक्षस दल आबी-आबी कें,
करै यज्ञ कें भंग।
यज्ञ सम्हारें माँगी लानै,
राम-लखन के संग ।। 4।।

मुनि के यज्ञ सम्हारै लेली,
लक्ष्मण साथें राम।
जंगल पहुँची राक्षस केरों,
करलक काम तमाम। 5।।

धनुष यज्ञ देखै के खातिर,
मिथिला करै पयान।
रस्ता बीच अहिल्या तारै
जे छेली पाषाण।। 6।।

आगू चललै शीघ्र जनकपुर,
पहुँचै मुनि के संग।
मुनिवर के इच्छा जानी के,
करै धनुष कें भंग।। 7।।

जयमाला गल्ला में डालै,
सिया राम कें जाय।
सुनी सुनैना हर्खित होली,
मन्द - मन्द मुस्काय।। 8।।

भरत-माण्डवी, लक्ष्मण साथें,
जँचै उर्मिला खूब।
श्रुतिकीर्ति शत्रुघ्न के जोड़ी,
देखी सब कें हूब।। 9।।

चारो केरोॅ चारो जोड़ी,
देखी हर्ष अपार।
सब्भै केरोॅ स्वागत लेली,
अवधपुरी तैयार।। 10।।

अवधपुरी मेॅ उत्सव केरोॅ,
झलकै छेलै रंग।
जन्नें देखोॅ, जकरा देखोॅ,
पीनें लागै भंग।। 11।।

तीनों माता हर्खित पूरा,
जन-जन में उत्साह।
राजा दशरथ के उमंग के,
कौनें पैतै थाह।। 12।।

पुत्री सब केॅ बिदागरी, सें,
लोर सुनैना आँख।
लागै जेना पक्षी केरोॅ,
कटलै दोनों पाँख।। 13।।

खाना-पीना कुछ नैं भावै,
पकड़ी बैठै माथ।
पुत्री सब केरोॅ वियोग मेॅ,
लागै सदा अनाथ।। 14।।

ऐलै खबर सुनैना केरोॅ,
लेनें एगो दूत।
विश्वासोॅ के लेली छेलै,
पासें एक सबूत।। 15।।

तखनी सुनी सुनैना केरोॅ,
आग्रह सब्भे भाय।
खुशी-खुशी सें दर्शन लेली,
जनकपुरी सिधिआय।। 16।।

कुछ दिन रहलै जनकपुरी मेॅ,
हर्खित राज विदेह।
रखै सुनैना आँखी आगू,
खूब लुटाबै नेह ।। 17।।

पुनः अयोध्या लौटै छेलै,
रस्ता मेॅ कुख्यात।
राजा लोग मचाबेॅ लगलै,
तब भारी उत्पात।। 18।।
धनुषयज्ञ मेॅ मुँह की खैलोॅ,
रहै लगैनें घात।
वहाँ करलकै धनुष-वाण के,
जोरोॅ सें बरसात।। 19।।

मार भगावै सब राजा कें,
दशरथ के संतान।
मगर भरत कुछ घायल होलै,
जकरों नैं अनुमान।। 20।।

चंगा होथैं मन बहलाबें,
भरत चलै ननिहाल।
माण्डवी, श्रुतिकीर्ति भी साथें,
साथ शत्रुहन लाल।। 21।।

कुछ्छू समय यहीना बीतै,
खूब करै सुख भोग।
रामचन्द्रजी राज चलाबै,
केरों होलै योग।। 22।।

राजा बोलै कोमल वाणी,
गुरु वशिष्ठ के पास।
'हे गुरुदेव पुराबों हमरों,
जे मन में छै आस।। 23।।

रामचन्द्र कें राजतिलक दें,
करी दहों युवराज।
पूरा पुरजन, परिजन होतै,
हरखित सकल समाज।। 24।।

'हे राजन तोरा पुत्रों के,
नाम रहै दिन-रात।
तोरा तें ईश्वर देनें छौं,
ई सुन्दर सौगात।। 25।।

शुभ मुहुर्त्त भी आबी गेलै,
नैं करना छै देर।
तोरण, कलश, पताका सगरे,
सजबों बेर-सबेर।। 26।।

समाचार मंगल जानी कें,
हरखित छै रनिवास।
अवधपुरी में फैली गेलै,
चहुँदिश हर्षोल्लास।। 27।।

सुनी शकुन शुभ सीता जी के,
फड़कै मंगल अंग।
मंगल कलश सजाबै तखनी,
मन में भरल उमंग।। 28।।
पुर नर-नारी नाचै - गाबै,
सब्भे छेलै मग्न।
आस लगैनें सोचै छेलै,
कखनी छै शुभ लग्न।। 29।।

कवित्त

रामें ई खबर सुनी, बैठी गेलै सिर धुनी,
अखिया बहाबै छेलै, अश्रु केरों धरबा।
कहिनों मुहुर्त्त ऐलै, हाथें हथकड़ी होलै,
फसरी में फसी गेलै, आय देखों गरबा।
तिलक लगाइ देतै, राज भी गछाई देतै,
गला पहनाई देतैं, फूलों केरों हरबा।
जंगल पहाड़ जहाँ, सिंहों के दहाड़ जहाँ,
ऋषि-मुनि केरों होतै, कैसें उपकरबा।। 30।।

धरमों के हानि होलै, लोग अभियानी होलै,
ओकरों उकान छेकै, हमरों उदेशवा।
साधु-सन्त भोगी रहै, असरा में लागी रहै,
सुरक्षा ऊ जान छेकै, हमरों उदेशवा।
मेटी देबै दुराचारी, एकांएकी पारा-पारी,
खोजी सुनसान छेकै, हमरों उदेशवा।
भूमि केरों भार हरी, आतंकी सुधार करी,
सबके कल्याण छेकै, हमरों उदेश्वा।। 31।।

सोरठा

गुरु वशिष्ठ लग जाय, लोर बहाबै आँख सें।
हमरा दें समझाय, जन्मों के उद्देश्य की।। 32।।
गुरु वशिष्ठ घबड़ाय, देखी हालत राम के।
बोलै यों समझाय, की कारण ई शोक के।। 33।।

दोहा

हे गुरुवर सर्वज्ञ छोॅ, कर जोड़ै छी आय।
राज-पाट नैं चाहियोॅ, कोनों करोॅ उपाय।। 34।।

बात बुझलकै देर सें, सोचेॅ लगलै खूब।
राज तिलक कल राम के, रामोॅ केॅ नैं हूब।। 35।।

जन्मों के उद्देश्य की, घूरै मन मेॅ बात।
दुखहारी श्रीराम छै, गुरु वशिष्ठ केॅ ज्ञात।। 36।।

गुरुवर बोलै वत्स तों, सही करैल्हेॅ याद।
निशाचरोॅ सें देश केॅ, करना छै आजाद।। 37।।

ई कामोॅ मेॅ चाहियोॅ, कैकेयी के साथ।
अगर मनाबोॅ जाय तों, जोड़ी दोनों हाथ।। 38।।

राजा दशरथ पास छै, बाँकी इ बरदान।
माँगै के आग्रह करोॅ, देखी केॅ सुनसान।। 39।।

गुरुवर केरोॅ बात सें, राम रहै संतुष्ट।
करना वहेॅ उपाय छै, मिटै धरा के दुष्ट।। 40।।

गुरुवर सें आशीस लै, रामचन्द्र कर जोड़।
मन मेॅ सोच विचार कर, सदा बढ़ाबै गोड़।। 41।।

❖❖❖

सर्ग–चार

श्री रामचन्द्र मन-मन सोचै,
माता कें आज मनाना छै।
विप्र, धेनु, सुर, संतों लेली,
जन्मों के मर्म बुझाना छै।। 1।।

माता में उत्तम छै माता,
सब घरम-करम जानै वाली।
मैया अपना जानों सें भी,
बढ़लों हमरा मानै वाली।। 2।।

देखै छी आय असर कतना,
मैया के ऊपर लानै छी।
मैया हमरा लेली होतै,
तैयार हमेशा मानै छी।। 3।।

रात जखनियें बारह बजलै,
श्री रामचन्द्र सिधियाबै छै
माता के दरवाजा खट-खट,
हाथों सें ठोक बजाबै छै।। 4।।

चौंकी उठलै मैया सुनथैं
आबी कें दरवाजा खोलै।
जब रामचन्द्र पर नजर पड़ै,
तब मधुर वचन मैया बोलै।। 5।।

ऐलौ कोन मुसीबत बेटा!
हमरा जल्दी तों बतलाबें।
तो मध्य रात में आबै के,
की कारण हमरा समझाबें।। 6।।

'राज्याभिषेक कल हमरों छै,
मैया तों सब्भे जानै छों।
सब बेटा सें बढ़लों हमरा,
तोहीं हरदम्में मानै छों'।। 7।।

सुनथैं मैया हर्खित होलै,
मोती के थाल दिखाबै छै।
सोना-चाँदी ढेरी लेनें,
रामों के आगू आबै छै।। 8।।

बहुमूल्य चीज देखें बेटा,
कल हमरा यहेॅ लुटाना छै।
यही दिनाँ खातिर धरलोॅ,
ई सब्भे माल-खजाना छै।। 9।।

माता कैकेयी के नाटक,
देखी-देखी चिन्तित होलै।
योजना सकल आगू केरोॅ,
सोचै मन-मन केना खोलै।। 10।।

देख राम के चिन्तित मुद्रा
कैकेयी पर पानी पड़लै।
लागै बाढ़ोॅ के पानी सें,
अन-धन सब्भे कोठी सड़लै।। 11।।

माता बोलै बेटा बोलें,
कहिनें चिन्ता भरलौ मन मेॅ।
महा कठिन ऊ कोन समस्या,
ऐलौ तोरा ई जीवन मेॅ।। 12।।

रामो बोलै अवसर देखी,
माता तों सब कुछ जानै छोॅ।
हमरोॅ जीवन के मर्यादा,
तोहीं खाली पहिचानै छोॅ।। 13।।

'जकरोॅ दुख-दरदोॅ केॅ देखी,
देवलोक मेॅ मचलै शोर।
निशाचरोॅ के ताकत बढ़लोॅ,
नैं चलतै ककरोॅ भी जोर।। 14।।

ऊ अन्यायी नाश करै के,
सोचोॅ मैया जरा उपाय।
नें तेॅ दिन-दिन बढ़ले जैतै,
धरती ऊपर ई अन्याय'।। 15।।

'बात समझ मेॅ ऐलै बेटा,
पर हम्मेॅ बिल्कुल लाचार।
हर बढ़िया कामोॅ मेॅ होतै,
बाधक सगरे तोरोॅ प्यार।। 16।।

हमरा यै मेॅ की करना छै,
सोचै मेॅ हम्मेॅ नाकाम।
हमरा तेॅ आँखी के आगू,
नाचै छै बस एक्के राम'।। 17।।

'काम धैर्य सें लेभो मैया!
सब्भै के होतै कल्याण।।
पूज्य पिताजी माथा पर छौं,
दू-दू ठो तोरोॅ वरदान।। 18।।

माँगै के अवसर ऐलोॅ छै,
नैं होतै कोनों व्यवधान।
भरत लाल केॅ राज तिलक तों,
माँगी लेॅ पहिलोॅ वरदान'।। 19।।

सुनथैं मूर्छित होलै मैया,
नैं रहलै देहोॅ मेॅ खून।
धरती पर गिरलै वोहीना,
लकड़ी जेना लगलोॅ घून।। 20।।

होश सम्हारी फेनूँ बोलै,
कहिनें ई होतै अन्याय।
अहिनों बोल निकालै वाली,
चण्डालिन ऊ होतै माय।। 21।।

हमरा प्राणों सें तों प्यारोॅ,
हमरा खाली चाही राम।
हम्में की सारी दुनिया छै,
रामोॅ बिन बिल्कुल नाकाम।। 22।।

वोही बीच सुनाबै रामें,
नैं छेलै जकरोॅ आभास।
दोसर वर माँगी लेॅ मैया,
चौदह बरस राम वनवास।। 23।।

राम उठाबै कैकेयी कें,
कैकेयी होलै निस्तेज।
ऊ कैसें काँटों पर बुलतै,
जकरा छै फूलों के सेज।। 24।।

कैकेयी बोलै पहिलों वर,
माँगी लौं बिल्कुल आसान।
पर दोसरका वर माँगै सें,
पहिनें निकलै हमरों प्राण।। 25।।

पिल्लू पड़तै मुँह में तकरा,
जे बोलें अनहोनी बात।
राम बिना बेचैन प्रजा लें,
मुश्किल छै जीना दिन-रात।। 26।।

'मोह हृदय सें त्यागों माता,
तभिये होतै कोनों काम।
सिर्फ अयोध्या वासी लेली,
नैं ऐलै धरती पर राम' ।। 27।।

'कौशल्या आँखी के तारा
कैकेयी गल्ला के हार।
भूली कैसें भागी जैभें,
बहिन सुमित्रा के उपकार।। 28।।

राजा केरों प्राण पखेरू,
उड़तै सुनी अमंगल बात।
तखनी जन-जन के आँखी सें,
बिन बादल होतै बरसात।। 29।।

"सब्भें बात सही छै माता!
बनों यहाँ पर नैं अनजान।
काम महा शुभ तोरा द्वारा,
होना छै तोरा अनुमान।। 30।।

अभी राम मानव हे माता,
महामानव चाहों बनाय।
माँगी लें वरदान अखनियें,
नैं छै कोनों अन्य उपाय'।। 31।।

'बड़ा कठिन छै बात राम ई,
मानी गेलौं हम्में हार।
हमरा ऊपर थू-थू करतै,
जानी लें सौंसे संसार'।। 32।।

हमरा सें बेशी छौं मैया,
तोरा लेली ई संसार।
तब तें अखनी तोरा आगू,
मानी गेलौं हम्में हार।। 33।।

अगर महामानव के दर्जा,
तोरा चलतें पैतै राम।
बेटा लेली कष्ट उठाना,
नैं छै अनहोनी ई काम।। 34।।

पर छेकौं सौतेला बेटा,
कहिनें करभो ई उपकार।
अपनाँ लेॅ तेॅ जान गमैथैं,
छै सब दिन पूरा संसार।। 35।।

भरत लाल गर बात कहतिहों,
होतिहो मैया तों तैयार।
स्वारथ केरोॅ बात हमेशा,
करतें ऐलोॅ छै संसार।। 36।।

व्यंग्य वचन रामोॅ के तखनी,
कैकेयी पर असर दिखाय।
रामोॅ के आगू मेॅ आबी,
बोलै छै पूरा घबड़ाय।। 37।।

जो रे बेटा! काल देखिहैं,
सौतेली माता के काम।।
की-की नाटक करबै हम्में,
होतै पूरा काम तमाम।। 38।।

कैकेयी के बात सुनी कें,
रामचन्द्र मन-मन मुस्काय।
बोलै मैया धन्य-धन्य छों,
तोरा आगू शीश झुकाय।। 39।।

एक बात जानी लें मैया,
गुरु वशिष्ठ जानै छै बात।
तोरा हमरा छोड़ी अखनी,
बात रहें पूरा अज्ञात।। 40।।

अगर तीन सें चार जानतै,
निष्फल होतै सब्भे काम।
मर्यादा के अन्दर सब्भे,
गुरु वशिष्ठ, माता, या राम।। 43।।

राम गोड़ मैया के छूबी,
आशिष लै तखनी भरपूर।
धीरें-धीरें डेग बढ़ैनें,
गेलै तब नजरों सें दूर।। 42।।

देखों दुनिया आँख पसारी,
माँ बेटा के अद्‌भुत बात।
बेचैनी में कैकेयी के
बीती गेलै पूरे रात।। 43।।

❖❖❖

सर्ग–पाँच

कैकेयी भिखारिनी के वेषवा बनानै आरू,
जेवर उतारी फेकै घर पिछुआड़ी मेॅ।
अंग वस्त्र देखी-देखी अचरज लागतिहों,
चलनी सें बदतर छेद रहै साड़ी में ॅ।
लामी-लामी केशिया केॅ मुँहों पर लटकाबै,
आँख झलकाबै जेना फूल लागै झाड़ी मेॅ।
गौर करी देखला पेॅ आँखी मेॅ उफान छेलै,
उठलै तूफान जेना बंगालोॅ के खाड़ी मेॅ ।। 1।।

कोप रे भवनमा के नाम दशरथ सुनै,
सहमै डरोॅ सें आरू गोड़ लड़खड़ाबै छै।
जकरोॅ भुजा के बल इन्द्र भी निडर फिरे,
नारी के बेरूखी पर बोहो घबड़ाबै छै।
वज्र वो त्रिशूलवा के चोट नैं असर करै,
रतिदेव वणमा सें सोहो मुरझाबै छै।
शुभ घड़िया मेॅ देखी मेघवा बिपतिया के,
कोप रे भवनमा मेॅ दशरथ आबै छै ।। 2 ।।

कैकेयी के दशा विलोकी, दशरथ जी घबड़ाय।
बदन भिड़ाबै हाथ जरा सा, रानी मुँह चमकाय।। 3।।

भींगी बिल्ली राजा बनलै, बात समझ नैं आय।
कोन मुसीबत आगू ऐलै, सोची मन पछताय।। 4।।

राजा बिल्कुल नम्र भाव सें, बोलै बोलोॅ बात।
तोरा मानों-सम्मानों पर, होलै की आघात।। 5।।

तोरा खातिर एक बनैबै, ई धरती आकाश।
हमरा खाली होना चाही, जुल्मोॅ के आभास।। 6।।

राजा फेनू छूवेॅ चाहै, दिखलाबै तब क्रोध।
क्रोधाग्नि भड़कै के तनियो, राजा केॅ नैं बोध।। 7।।

कामदेव के क्रीड़ा समझै, नागिन के फुफकार।
कैकेयी तेॅ अवसर खोजै, कखनी करियै वार।। 8।।

कोकिलबयनी बात बताबोॅ, कहिनें छौं ई हाल।
ककरा सिर पर मँड़राबै छै, जल्दी बोलोॅ काल।। 9।।

अगर कहोॅ तेॅ राजा करबै, जे बिल्कुल कंगाल।
राजा केॅ यमलोक पठैबै, अखनी बनबै काल।। 10।।

दनुज-मनुज के बाते छोड़ोॅ' अमर देवता आय।
हमरा वाणोॅ के आगू मेॅ, सब जैतै घबड़ाय।। 11।।

परिजन, प्रजा, प्राण सुत हमरो,ॅ सब तोरोॅ लेॅ मान।
हम्में खाली देखेॅ चाहौं, ओठोॅ पर मुस्कान।। 12।।

अगर यहाँ पर कपट बुझाभों, हम्में जो मतिमंद।
सच्चा मानोॅ वचन निभैबै, रामोॅ के सौगंध।। 13।।

अपनों उल्लू सीधा करना, कैकेयी के चाल।
राजा के बोली-वचनोॅ में गलतै देखै दाल।। 14।।

कपड़ा-लत्ता ठीक करलकै, जेवर देह सजाय।
राजा के नजदीकें आबी, मन्द-मन्द मुस्काय।। 15।।

हे प्राण प्रिये दशरथ बोलै, घर-घर में आनन्द।
चारण कर उच्चारण गाबै, बढ़िया-बढ़िया छन्द।। 16।।

ढोल-नगाड़ा बजै बधावा, जनता छै खुशहाल
तोरोॅ दशा निहारी हमरा, भारी रहै मलाल ।। 17।।

चन्द्रमुखी मन हर्खित देखी, तोरोॅ मंगल साज।
कल पाना छै रामचन्द्र केॅ, पावन पद युवराज।। 18।।

राज्याभिषेक के तैयारी, सुन्दर लगन विचार।
ई बातें तेॅ भोकेॅ लगलै, रानी हृदय कटार।। 19।।

अन्तर के दुर्भाव छिपावै, ओठोॅ सें मुस्काय।
राजा के गल्ला मेॅ दै छै, अपनों बाँह फँसाय।। 20।।

हे प्रियतम तों माँगोॅ-माँगोॅ, कहनें छोॅ सौ बार।
माँग पुराबै खातिर बोलोॅ, कहिया तों तैयार ।। 21।।

भूलै के सच आदत हमरोॅ, नैं रहलै कुछ याद।
रखी घरोहर माँगै के नैं, कोशिश होलै बाद।। 22।।

झूठ-मूठ नैं दोष चढ़ाबोॅ, कहै छिहों दिल खोल।
वचन निभाबै मेॅ नैं कुच्छू, प्राणों के छै मोल।। 23।।

रघुकुल रीति प्रसिद्ध धरा पर, दू के बदला चार।
माँगी लेॅ वरदान अखनियें, थाती छै बेकार।। 24।।

सच्चा अहिनों तप नैं रानी, झूठा अहिनों पाप।
तइयो तोरा हृदय-पटल पर, कहिनें पश्चाताप।। 25।।

अवसर ताकी रानी बोलै, पहिलोॅ ई वरदान।
भरत लाल केॅ राजतिलक देॅ, राखोॅ हमरोॅ मान।। 26।।

दोसर तापस वेष बनैनें, भाव विशेष उदास।
भेजोॅ चौदह बरसोॅ लेली, रामचन्द्र बनवास।। 27।।

रानी के कोमल वचनों सें, राजा हुवै निराश।
बात सामनें अहिनों ऐलै, जकरोॅ नैं आभास।। 28।।

रंग बदललै राजा केरोॅ, बदलै सारा साज।
लगै बटेरोॅ पर धोखा सें, झपटी गेलै बाज।। 29।।

ताड़ोॅ गाछी बिजली गिरलै, झुलसी केॅ बदरंग।
ठीक वही ना झलकै छेलै, राजा केरोॅ अंग।। 30।।

आँख बन्द राजा के होलै, मन मेॅ भारी सोच।
वर माँगै मेॅ नैं रानी केॅ, तनियो टा, संकोच।। 31।।

अयोध्या पर आबी गेलै, विपत्ति केरोॅ राज।
जंगल-जंगल राम भटकतै, अन्नोॅ लेॅ मुँहताज। 32।।

राजा के ई हालत देखी, रानी के फुफकार।
विष उगलै छै जेना करतै, राज-पाट केॅ क्षार।। 33।।

राजा सें बोलै कैकेयी, बेटा खाली राम।
भरत सरंगोॅ सें गिरलोॅ छै, जे बिल्कुल नाकाम।। 34।।

हम्में कहाँ वियाही औरत, लागौं ठीक रखेल।
हमरा आगू तनियो टा नैं, चलतै तोरोॅ खेल।। 35।।

माँगोॅ-माँगोॅ वर तों माँगोॅ, बोली बड़ी अमोल।
आजे खुललै हमरा आगू, तोरोॅ सब्भे पोल ।। 36।।

अभियो नैं कुछ बिगड़ी गेलै, बदलोॅ अपनोॅ बात।
सत्य-धर्म के रट्ट लगाबोॅ, झूट्ठे तों दिन-रात ।। 37।।

सिबि, दधीचि, बलि वचन निभाबै, दैकेॅ तन-धन-प्राण।
स्वारथ मेॅ तों डुबलोॅ अखनी, की देभेॅ वरदान ।। 38।।

राजा सोचै कैकेयी केॅ, की समझाबौं आय।
छाती पर पत्थर राखी केॅ, बोलै कुछ मुस्काय।। 39।।

हे मृगनयनी, मधुर भाषिनी, तोहीं हमरोॅ पाँख।
राम-भरत दोनों भाई ते,ॅ हमरोॅ दोनों आँख। 40।।

भोरे होथैं दूत पठैबै ऐतै दोनों भाय।
भरत लाल कें राजा केरों, देबै तिलक लगाय।। 41।।

रामचन्द्र कें लोभ जरा नैं, गद्दी के नैं चाह।
कौशल्या रानी कें होतै, तनियो टा नैं आह ।। 42।।

हम्में खाली बड़का समझी, करनें रहौं बिचार।
तोरा सें नैं पहिनें पूछौं, ई हमरा धिक्कार ।। 43।।

मन-मंदिर सें क्रोध भगाबों, सजबों सुन्दर साज।
होतै तुरत अयोध्या केरों, भरत लाल युवराज।। 44।।

मगर दोसरों वरदानों सें, हमरा नैं कल्याण।
सच्चा बोलों रानी अखनी, की तोरों अरमान।। 45।।

हँसी - मजाकों में बोलै छों, तों ई गड़बड़ बात।
जौनें करनें छै दशरथ के, प्राणों पर आघात।। 46।।

जों सच्चा अरमान यहें छों, रामों के की दोष।
बतलाबों हमरा आगू में, परित्यागी सब रोष।। 47।।

तों रामों के सराहना में, नैं थक्कों दिन - रात।
होलै कोन कसूर यहाँ पर, बिगड़ी गेलै बात।। 48।।

बदलों तों वरदान दोसरों, मानों विचार नेक।
तभिये संभव देखें पारौं, भरत राज्य अभिषेक।। 49।।

बिन पानी के मछली जीतै, मणि बिन मनियर ठीक।
बर्फ जरा सा भी नैं पिघलै, सूरज के नजदीक ।। 50।।

अनहोनी सब बातो संभव तइयो ले॑ ई मान।
रामो॑ बिन नैं रहना संभव, दशरथ केरो॑ प्राण।। 51।।

राजा दशरथ के वाणी सें रानी हृदय कठोर।
नैं पिघलै छै, आरू उलटे, चमकावै छै ठोर।। 52।।

रानी बोलै तीक्खो॑ बोली, करभे॑ कोटि उपाय।
हमरा ऊपर असर जरा नैं, की होथौं पछताय।। 53।।

हम्में जे माँगै छी दे॑ दे॑, नैं ते॑ तोरो मो॑न।
अपयश माथा सें नैं जैथों, धरले रहथौं धो॑न।। 54।।

छल-प्रपंच तोरा मे॑ भरलो॑, हम्मे॑ छी अनजान।
भरत बिराजै ननिहालो॑ मे॑, तों ते॑ चतुर सुजान।। 55।।

भूली गेल्हे॑ पूज्य पिता सें, करलो॑ कौल - करार।
दोष एक वरदानो॑ केरो॑, हमरा पर बेकार।। 56।।

राम साधु, तों महासाधु छो॑, कौशल्या रड० नार।
मीट्ठो॑ बोलै मे॑ छै माहिर, जानै जन परिवार।। 57।।

एक्खै मे॑ दाँती लागै छों, तोरो॑ देखी हाल।
रघुकुल केरों नाम बुड़ैभो, होतै एक मिशाल।। 58।।

कल प्रातः रौदा उगला पर, सुनो॑ दया के धाम।
तापस वेष बनैतै आरु जंगल जैतै राम।। 59।।

अगर जरा-सा आना-कानी, हम्मे॑ देबै प्राण।
रघुवंशी के मर्यादा के॑, दुनिया लेतै जान।। 60।।

राजा बूझी बात सही छै, पकड़ै दोनों पैर।
बोलो॑ रानी समझाबो॑ तों, रामो॑ सें की बैर।। 61।।

मस्तक माँगो॑ अखनी देभों जरा न होतै देर।
रामो॑ के॑ वनवास भेजना, ई होतै अंधेर।। 62।।

पर रानी के भाव-भंगिमा, बोलै रोग असाध्य।
फेनूँ कौनें करे॑ पारतै, वर बदलै ले॑ वाध्य।। 63।।

आर्त्तनाद निकलै भीतर सें, हे रघुवर। हे राम।
सिर धुनतें-धुनतें धरती पर, गिरलै धो॑र धड़ाम।। 64।।

व्याकुल होलै राजा तखनी, होलै शिथिल शरीर।
जैसें पानी सें बाहर में, मछली बड़ी अधीर।। 65।।

आगिन मे॑ घी ढारी बोलै, रानी वचन कठोर।
माँगो॑ रानी, माँगो॑ रानी, झूट्ठे तोरो॑ शोर।। 66।।

हँसना, गाल फुलाना दोनों, संभव नैं छै राज।
तोरो॑ नाटक केरों परदा, पूरा उठलै आज।। 67।।

दानी आरू कंजूसों में, नैं समझै छों भेद।
राजा केरों अज्ञानों पर, हमरा भारी खेद।। 68।।

योद्धा युद्धभूमि में चाहै, नैं लागै तनि चोट।
समझी लें नीयत में होतै, निश्चित कोनों खोट।। 69।।

वचन निभाना संभव नैं तें बनों जरा गमखोर।
अवला नारी रड०, झूट्ठे तों, व्यर्थ बहाबों लोर।। 70।।

सत्यब्रती तिनका रड्०समझै, दारा, सुत, सब धोंन।
रघुकुल केरों नाक कटाना, लागै तोरों मोंन।। 71।।

मर्मभेदी वचन कैकेयी, बोलै सोची खूब।
राजा चिन्ता के सागर में गेलै पूरा डूब।। 72।।

भरत चाहतै राजा के पद, नैं हमरा अनुमान।
वें तें करतें रहै हृदय सें, रामों के गुणगान।। 73।।

कुसमय ताकी आय विधाता, कैसें होलै बाम।
तोरों बोली छेकै हमरों, पापों के परिणाम।। 74।।

पंख कटलका पक्षी नाँकी, राजा छै बेहाल।
पर नैं संभव रानी केरों, बदली जाना चाल।। 75।।

रोतें - धोतें राजा केरो,बीती गेलै रात।
राजद्वार पर हर्ष-उमंगों, के छेलै बरसात।। 76।।

❖❖❖

सर्ग-छह

आज अयोध्या राजभवन के,
शोभा अनुपम न्यारी छै।
रामोॅ केॅ युवराज बनाबै,
के सब्भे तैयारी छै ।। 1।।

वन्दनवार सजैलोॅ सगरे,
राजा के दरवारोॅ मेॅ।
स्वर्ग अयोध्या सें भी बढ़लोॅ,
की होतै संसारोॅ मेॅ।। 2।।

ढोल-नगाड़ा बाजा-गाजा,
सगरे शोर मचाबै छै।
चारण के उच्चारण देखोॅ,
विरूदावली सुनाबै छै।। 3।।

पर द्वारी के बाजा के धुन,
दशरथ प्राण जराबै छै।
चारण के उच्चारण राजा,
ऊपर वाण चलाबै छै।। 4।।

सूर्योदय होयैं मंत्रीगण,
सेवक धूम मचाबै छै।
राजा कें जागै में देरी,
जरा समझ नै आबै छै।। 5।।

सब्भे बोलै हे सुमंत्र जी !
राजा जाय जगाबों नें।
की-की करियै काम जरा सा,
आबी कें बतलावों नें ।। 6।।

सुमंत्र पहुँचै राजभवन में,
छैलों देखै अंधेरा।
राजा के आगू में छेलै,
दुख-तकलीफों के डेरा।। 7।।

राजा सोचों में छै व्याकुल,
मुख-मंडल मुरझैलों छै।
सूर्यवंश पर लागे जेना,
राहू-केतू छैलों छै।। 8।।

हे सुमंत्र बोलै कैकेयी,
राजा नैं कुछ बोलै छों।
चिन्ता के की कारण छेकै,
भेद जरा नैं खोलै छों।। 9।।

रातो भर बस राम-राम के,
पूरा रट्ट लगैनें छों।
अपना साथें-साथें हमरा,
पूरा रात जगैनें छों।। 10।।

पहिनें रामो॑ के॑ बोलाबो॑,
हाल पूछिहो॑ आबी के॑।
राजा के मन हरखित होथौं,
रामो॑ के॑ ही पाबी के॑ ।। 11।।

सब सुमंत्र के॑ देखी-देखी,
मन ही मन घबड़ाबै छै।
तब सुमंत्र कुछ बात बतैनें,
रामो॑ के लग आबै छै।। 12।।

सुमंत्र जैथैं बात बताबै,
रामचन्द्र झट आबै छै।
राजा के॑ निस्तेज जमीं पर,
बुरा हाल मे॑ पाबै छै। 13।।

होठ सूखलोॅ जरै शरीरो,
कैकेयी के वाणी सें,।
राजा छै बेचैन जेना कि -
मछली बाहर पानी सें।। 14।।

अहिनों दुख रामोॅ के आगू,
कहाँ अभी तक ऐलोॅ छै।
कैकेयी के बात निराली,
राजा तें मुरझैलोॅ छै।। 15।।

महा भयावह देख समस्या,
रामचन्द्र कर जोड़ी कें।
माता सें बोलै हे माता!
बात बताबोॅ फोड़ी कें।। 16।।

दशा पिताजी केरोॅ अहिनों,
कहिनें जरा बताबोॅ तें।
कष्ट निवारण लेली कोनों,
समुचित राह दिखाबोॅ तें।। 17।।

रानी बोलै सुनोॅ पुत्र तों,
राजा तोरोॅ मोहोॅ मेॅ।
जानी-बूझी भसलोॅ लागै,
अज्ञानों के बोहोॅ मेॅ।। 18।।

राजा आगू दू वरदाने,
हमरोॅ थाती धरलोॅ छै।
आज वहेॅ माँगे के क्रम मेॅ,
चिन्तित देखोॅ पड़लोॅ छै।। 19।।

भरत लाल केॅ राज तिलक देॅ,
माँग सुनी घबड़ैलोॅ छै।
रामचन्द्र बनवास दोसरोॅ,
सुनथैं बस मुरझैलोॅ छै।। 20।।

आरू नैं कुछ कारण जानौं,
सच-सच बात बतावै छी।
माँग बड़ा दुख दाई होलै,
सोची केॅ पछतावै छी।। 21।।

सूर्यवंश के सूर्य सुनी केॅ,
स्वाभाविक मुस्काबै छै।
फेनूँ माता के आगू मेॅ,
वाणी मधुर सुनाबै छै।। 22।।

'हे माता! ऊ पुत्र हमेशा,
जानी लेॅ बड़भागी छै।
जे अपनों गुरु मातु पिता के,
वचनों के अनुरागी छै।। 23।।

हौ बेटा दुर्लभ संसारे,
दुख बूझै माँ-बापोॅ के।
के भागी होलोॅ छै अपनों,
परिजन के संतापोॅ के।। 24।।

जंगल मेॅ मुनि मिलन हमेशा,
पिता वचन भी माथें छै।
सौभाग्य उदित हमरोॅ जानोॅ,
मैया के सहमति साथें छै।। 25।।

प्राणोॅ सें प्रिय भरत चलैतै,
राज-काज अब जानी लेॅ।
सार्थक जन्म बनैल्होॅ मैया,
तोहीं अखनी मानी लेॅ।। 26।।

पूज्य पिता केॅ चिन्तित देखी,
हमरोॅ मन घबड़ाबै छै।
तुच्छ बात के लेली मुर्छा,
जरा समझ नैं आबै छै।। 27।।

आरू जों कुछ कारण जानोॅ,
मैया हमरा बतलाबोॅ।
कठिन समस्या दूर तुरन्ते,
होतै नैं मन मेॅ दाबोॅ।। 28।।

कैकेयी बोलै ई राजों कें,
मन में खूबे छानै छी।
राम-भरत के शपथ खाय कें,
बोलौं नैं कुछ जानै छी।। 29।।

बेटा तों तें महा विवेकी,
सोची समझी जानी लें।
राजा सिर पर अपयश भारी,
नैं आबै ई ठानी लें।। 30।।

रामचन्द्र के याद करै छै,
राजा राम पुकारी कें।
मंत्री राजा कें बैठाबै,
वैझैं पलथी मारी कें ।। 31।।

राम चरण पर लेटी गेलै,
राजा हृदय लगाबै छै।
हरखित जेना मणि हेरैलों,
साँपें फेनूँ पाबै छै।। 32।।

शोकाकुल नैं बोलै कुच्छू,
छाती पीटी कुहरै छै।
रामचन्द्र नैं जंगल जैतै,
ब्रह्माजी कें सुमिरै छै।। 33।।

महादेव कें करै निहोरा,
औघड़दानी जानी लें।
रामचन्द्र जों जंगल जैतै,
मुश्किल जीना मानी लें।। 34।।

रामचन्द्र के मति फेरी दें,
हमरा सबकें छोड़ी कें।
नैं जैतै वनबास कखनियों,
परिजन सें मुँह मोड़ी कें।। 35।।

सिर पर लेबै अपयश ढेरी,
होबै पापों के भागी।
नरक यातना मंजूरे छै,
मगर राम नैं बैरागी।। 36।।

राम बिचारै पिता स्नेहवश,
आरू जो कुच्छू कहतै।
झूठ-झूठ सब्भै आँखी सें,
बेमतलब आँसू बहतै।। 37।।

रामचन्द्र कर जोड़ी ठाढ़ों,
मन ही मन मुस्काबै छै।
कैकेयी माता के नाटक,
सही समझ में आबै छै।। 38।।

"पूज्य पिता के आज्ञा पालन,
करतें जंगल जाना छै।
फेनूँ तें हमरा लौटी कें,
यहें अयोध्या आना छै।। 39।।

आज्ञा, आशीर्वाद चाहियों,
हम्में अर्ज सुनाबै छी।
तुरत विदा माँगी माता सें,
लौटी यैठाँ आबै छी।। 40।।

रामचन्द्र निकलै तेजी सें,
माता के लग आबै छै।
बात सुनी माता कौशल्या,
आँखी लोर बहाबै छै।। 41।।

जेनाँ - जेनाँ जौनें जानै,
कैकेयी कें गरियाबै।
की अनहोनी घटना घटलै,
कैसें समझ कहाँ आबै।। 42।।

चौपट होलै राज अयोध्या,
कुटिल, कठोर कुनारी सें।
राम विदाई माँगै छेलै,
सब सें पारा-पारी सें।। 43।।

❖❖❖

सर्ग-सात

जौनें जानै कैकेयी के,
ईर्ष्या सें भरलोॅ व्यवहार।
दौड़ी - दौड़ी आबेॅ लगली,
राजा दशरथ के दरवार।। 1।।

कुल खनदानोॅ के नारी सब,
सखी-सहेली बैठै साथ।
बूढ़ी दादी शील सराहै,
पकड़ी बोलै दोनों हाथ।। 2।।

हे कैकेयी तोरोॅ कहियो,
नैं देखलौं सौतिया डाह।
तोरोॅ दशा निहारी देखौं,
पाना मुश्किल लागै थाह ।। 3।।

कौशल्या के दोष बताबोॅ,
कहिनें होलै ई आघात।
स्वर्ग सरीखा राज अयोध्या,
जकरा ऊपर बज्र-निपात।। 4।।

सीता की रहतै रामोॅ बिन,
लक्ष्मण भी तेॅ मारै हाय।
रामचन्द्र बिन भरत लाल केॅ,
अयोध्या के राज सोहाय।। 5।।

राजा दशरथ प्राण राखतै,
रामों के बिन कहाँ नुकाय।
राजा, मंत्री, गुरु वशिष्ठ सब,
अभिये गेलों छै मुर्झाय।। 6।।

क्रोध - मोह कें त्याग विचारों,
भरत लाल होतै युव राज।
पर समझाबों रामचन्द्र के,
जंगल में की की छै काज।। 7।।

भरत राज के रामे काँटों,
जों तोरा लाघों अनुमान।
घर छोड़ै के रामचन्द्र कें,
माँगी लें दोसर वरदान।। 8।।

रामचन्द्र वन लेली आतुर,
तकरा रानी लें लौटाय।
शोक मिटै जेना कें कोनों,
हठ कें त्यागी करों उपाय।। 9।।

रातों के शोभा छै चन्दा,
सुन्दर तन के जेना प्राण।
वोन्हैं राज अयोध्या केरों,
रामचन्द्र छेकै दिनमान।। 10।।

मीट्ठोॅ सीख, परम हितकारी,
सखी सहेली बोलै छै।
पर तनियो टा ई बातोॅ सें,
नैं रानी मन डोलै छै।। 11।।

रोग भयावह लाइलाज छै,
सखी-सहेली जानी कें।
गरियाबै छै कैकेयी कें,
दुष्ट अभागिन मानी कें।। 12।।

कानै- बाजै छै नगरोॅ के,
जन्नें-तन्नें नर-नारी।
हिन्नें रामोॅ के छै पूरे,
जंगल केरोॅ तैयारी।। 13।।

माता कौशल्या सें माँगै,
दें दें आज्ञा जंगल के।
बीती रहलोॅ छै अब माता,
सही घड़ी शुभ मंगल के।। 14।।

कौशल्या के दुख के वर्णन,
संभव नैं छै वाणी सें।
वहें दशा मानी लें मन मेॅ,
मीन निकललोॅ पानी सें।। 15।।

धीरज राखी रानी बोलै,
कठिन समस्या जेना कें।
हमरा आगू आबी गेलै,
बात बिगड़लै केना कें।। 16।।

सूर्यवंश में आग पसारै,
कौनें काठी बारी कें।
राम बताबै कथा समूच्चे,
तखनी हारी - पारी कें ।। 17।।

साँप छुछुन्दर केरों हालत,
कौशल्या के जानी लें।
धर्म परायण नारी छेलै,
वोहो तें पहिचानी लें।। 18।।

"झूठा स्नेह बढ़ाबौं आरू,
बाधा डालौं कामों में।
समुचित नैं छै बेटा अखनी,
व्याकुल छै सब गाँमों में।। 19।।

भला करै भगवान हमेशा,
सुख के छाया साथों में।
दुनिया कें कल्याण करै के,
रेखा तोरा हाथों में।। 20।।

एक डेग नैं आगू बढ़लै,
सीता गिरलै गोड़ों पर।
अर्द्धांगिनी तें साथ हमेशा,
हर संकट हर मोड़ों पर।। 21।।

जीवन ई बेकार लगै छै,
अगर काम नैं आबै छी।
अपनों डफली, अपनों रागो,
अलग कहीं जो गाबै छी।। 22।।

माता सें आज्ञा माँगै लें,
जेन्हैं सीता बढ़लों छै।
रामों के चरणों पर आबी,
अनुज लखन भी पड़लों छै।। 23।।

'भैया हम्में सेवक तोरों,
हमरा तों नैं ठुकराबों।
सार्थे रहबै, सेवा करबै,
हाथ रखी सिर दुलराबों' ।। 24।।

नीति निपुण सुख सागर स्नेही,
रामचन्द्र समझाबै छै।
मातु-पिता-गुरु केरों सेवा,
अवसर कम्में आबै छै।। 25।।

भरत-शत्रुहन ननिहालो ँ में,
पिता बृद्ध परिवारों मे ँ।
सबके सेवा से बढ़िया फल,
नैं झलकै संसारो ँ मे ँ।। 26।।

लक्ष्मण पकड़ी गोड़ कहै छै,
सेवक ते ँ हाथे मलतै।
स्वामी के आगू हरदम्में,
पछतैतै पर की चलतै।। 27।।

तों उपदेश सुनैल्हे ँ भारी,
पर हम्में ते ँ छी बच्चा।
गुरु-पितु-माता तोरा छोड़ी,
नैं जानौं, मानों ँ सच्चा।। 28।।

धर्म-नीति, उपदेश सुहाबै,
तकरा जे बैरागी छै।
ओकरा की मन-कर्म-वचनों सें,
चरणों के अनुरागी छै।। 29।।

लक्ष्मण के मति गति जानी के ँ,
रामचन्द्र मुँह खोलै छै।
मातु सुमित्रा सें आज्ञा ले ँ,
लक्ष्मण के ँ तब बोलै छै।। 30।।

गदगद होलै लक्ष्मण तखनी,
माता के लग आबै छै।
रामचन्द्र सीता के साथें,
जंगल जैबै, गाबै छै।। 31।।

माता के मन उदास देखी,
कथा कहै विस्तारों सें।
हमरा राम सिया कें छोड़ी
की लेना संसारों सें।। 32।।

महा कठिन वचन सुनी सहमै,
मातु सुमित्रा जानी लें।
जैसें हिरणों के चारो दिश,
आग पसरलों मानी लें।। 33।।

मन कें राखी थीर सुमित्रा,
कहै जानकी माता छौं।
पिता समान हमेशा साथें,
रामचन्द्र जी भ्राता छौं।। 34।।

जहाँ राम छै वहीं अयोध्या,
सीता जैथों साथों में।
सेवा करना काम हमेशा,
लिखलों तोरा हाथों में।। 35।।

गुरु-पितु-माता भाय देवता,
सब बढ़लोॅ छै जानोॅ सें।
रघुकुल शोभै रामचन्द्र सें,
दिन जैसें दिनमानोॅ सें।। 36।।

राम सिया के साथ रही केॅ,
सेवा के फल पाना छै।
राग, द्वेष, मद-मोह कभी नैं,
जीवन मेॅ अपनाना छै।। 37।।

काम वहेॅ तों करिहोॅ बेटा,
जरा कष्ट नैं रामोॅ केॅ।
अनुजोॅ के नैं अभाव खटकै,
रामचन्द्र सुखधामोॅ केॅ।। 38।।

माता के आज्ञा पाबी केॅ,
हरखित लक्ष्मण मन ही मन।
तेजी सें श्री रामचन्द्र लग,
आबी गेलै राजभवन।। 39।।

तीनों राजा दशरथ आगू,
हाथ जोड़नें आबै छै।
मंत्री राजा केॅ वोही क्षण,
पकड़ी केॅ बैठाबै छै।। 40।।

सीता साथें राम लखन केॅ,
देखी नृप अकुलाबै छै।
मोह - स्नेहवश बारी-बारी,
अपना लग बोलाबै छै।। 41।।

राम कहै हे पूज्य पिताजी!
आज्ञा देॅ केॅ हरसाबोॅ।
रघुकुल केरोॅ रीति निभाबोॅ,
प्रेम सुधा रस बरसाबोॅ।। 42।।

होश सम्हारी सीता जी केॅ,
राजा हृदय लगाबै छै।
जंगल केरोॅ कथा-व्यथा सब,
बोली केॅ समझाबै छै।। 43।।

अरून्धती गुरु माता बोलै,
ससुर-सास कहना मानोॅ।
पर सीता केॅ रामचन्द्र के,
साथ-साथ रहना जानोॅ।। 44।।

राजा के नाटक कैकेयी,
देखी मुँह चमकाबै छै।
तापस वाला वस्त्राभूषण,
लेॅ रामोॅ लग आबै छै।। 45।।

हे रघुवीर! प्रेमवश राजा,
परलोकोॅ केॅ छोड़ी केॅ।
नरक यातना सहतै लेकिन,
रहलै नाता जोड़ी केॅ।। 46।।

तोरोॅ मन जे अच्छा लागै,
खूब विचारी करना छै।
अज्ञानों के आगोॅ मेॅ बस,
राजा केॅ अब जरना छै। 47।।

सीख सुनै माता के जखनी,
रामचन्द्र हरसाबै छै।
वचन-वाण सें घायल राजा
तड़पै छै, पछताबै छै।

रामचन्द्र मुनि वेष बनाबै,
मातु-पिता सिर नावै छै।
राजमहल सें निकली फेनूँ,
गुरु वशिष्ठ लग आबै छै।। 49।।

गुरु सें आज्ञा माँगी आगू,
रामचन्द्र सिधियाबै छै।
सीता लक्ष्मण साथें-साथें,
डेग बढ़ैनें आबै छै।। 50।।

❖❖❖

सर्ग – आठ

पुत्र विरह में राजा दशरथ,
जब गेलै सुरलोक।
अवधपुरी के जड़-चेतन में,
झलकें लगलै शोक ।। 1।।

भरत लाल कें ननिहालों सें,
लानै लें तत्काल।
गेलै दूत मगर नैं बोलै,
अवधपुरी के हाल।। 2।।

राह धरलकै अवधपुरी के
सबकें जोड़ै हाथ।
चलै माण्डवी, श्रुतिकीर्ति भी,
दोनों केरों साथ।। 3।।

जैसें धरलक अवधपुरी में,
भरत लाल जी पाँव।
कानाफूसी होतें देखै,
गाछी केरों छाँव।। 4।।

राजभवन में झलकै छेलै,
चिन्ता केरों छाप।
भरत लाल कुछ भी नैं समझै,
कहिनों ई संताप।। 5।।

कैकेयी झट पास बुलाबै,
बोलै मीट्ठों बोल।
भरलों जहर घड़ा के मुँह पर,
मिसरी केरों घोल ।। 6।।

भरत लाल जानै लें बौला,
पूछै मन के बात।
मैया बोलों राजभवन में,
की होलै आघात।। 7।।

कैकेयी मुस्काबै मन-मन,
भरै भरत के कान।
बतलाबै झटपट राजा सें,
माँगै जे वरदान।। 8।।

आग बबूला सुनथैं होलै,
भरत बहाबै लोर।
कानी-कानी बोलें लगलै,
"पाप हुआ घनघोर" ।। 9।।,

रघुकुल भूषण रामचन्द्र को,
आज मिला वनवास।
माथे पर कैसे गिरा नहीं,
आकर के आकाश ।। 10।।

कोख लजायी तुमने अपनी,
कर के अत्याचार।
तुम जैसी जननी को जग में,
लाख-लाख धिक्कार।। 11।।

कैकेयी तब भरत लाल के,
पीठी पर दै हाथ।
भरत लाल कड़कै मैया पर,
"मैं हो गया अनाथ।। 12।।

मत छूओ मुझको हाथों से,
बाँटो नहीं कलंक।
जहरीली तेरी वाणी में,
बिच्छू का है डंक ।। 13 ।।

गली नहीं क्यों जीभ तुम्हारी
जब माँगी वरदान।
उल्टे मेरे पूज्य पिता के,
निकल गये झट प्राण।। 14।।

राज करो तुम अवधपुरी में,
छोड़ भरत का मोह।
मुझसे सहा नहीं जाता है,
भैया राम विछोह।। 15।।

कैकेयी अब नाम कलंकित,
नाम हुआ बदनाम।
जग में कोई भी न रखेगा,
कैकेयी अब नाम'।। 16।।

जीवन में घूमों तों जतना,
देखों गामे गाम।
नैं ककरो बेटी के मिलथौं,
कैकेयी अब नाम।। 17।।

भरत लाल के द्वारा होलै,
पूर्ण दाह-संस्कार।
पर नैं जीयै के कुछ रहलै,
बाँकी अब आधार।। 18।।

लौटाबेॅ रामोॅ केॅ गेलै,
पर सब्भे बेकार।
चरण पादुका गद्दी राखी,
पूजै लेॅ तैयार ।। 19।।

भरत निभाबै भाईचारा,
बड़ा अनूठा काम।
चौदह बरस बिताबै तापस,
भेषें नन्दी ग्राम।। 20।।

माता कैकेयी सें बोलै,
तापस भेषें राम।
अब जग के कल्याण करै में,
लगबै आठो याम।। 21।।

आगू बढ़लै राम दिखैनें,
मुख - मंडल पर तेज।
फूलोॅ के बदला जंगल में,
काँटोॅ केरोॅ सेज ।। 22।।

❖❖❖

सर्ग –नौ

बड़ी लगै विचित्र कहानी,
सोचोॅ करोॅ विचार।
तों घर के कोनों कामोॅ मेॅ,
खोजै छोॅ परिवार।। 1।।

बहिनी-बेटी केॅ बोलाभो,
बेटा अगर विदेश।
शुभ कामोॅ मेॅ आबै लेली,
देथैं छोॅ संदेश।। 2।।

जों कुटुम्ब-परिवार एक भी,
नैं आबै संयोग।
तोरोॅ यज्ञ सफल नैं कहथों,
गामोॅ केरोॅ लोग।। 3।।

भरत - शत्रुहन ननिहालोॅ मेॅ,
पत्नी उनखै संग।
नात्रा-मामा भी नैं आबै,
सुनथैं होभेॅ दंग।। 4।।

नौता नैं भेजैलोॅ गेलै,
जनक राज केॅ भाय।
लागै छै कुछछू तेॅ होतै,
यै मेॅ भी चतुराय।। 5।।

राजा दशरथ मन-मन सोचै,
भरत राम के भक्त।
पर मन चंचल बदलें पारें,
कहियो कोनों वक्त । 6।।

अपना पर उनका कुछ शंका
"खो ना जाय विवेक।
अतःशीघ्र ही रामचन्द्र का,
करना है अभिषेक।।" 7।।

सीता जी आरू लक्ष्मण कें,
नैं छेलै वनवास।
दून्हूँ जोड़ै हाथ राम कें,
बनलों दासमदास।। 8।।

समझैलों नैं जरा रखलकै,
जंगल गेलै साथ।
साथ निभैतें रहलै उनकों,
जे अनाथ के नाथ।। 9।।

राजा दशरथ कें नैं संभव,
दूर नजर सें राम।
इनियो साथ जैतियै जंगल,
मंगलमय सब काम।। 10।।

माता-पिता श्रवण के देनें,
छेलै जे-जे शाप।
टली जैतियै कुछ्छू दिन ले,ॅ
शापो अपने आप।। 11।।

वादा केॅ झुठलाबै खातिर,
सोचै बात अनेक।
पर होनी नैं चलेॅ देलकै,
मारै सकल विवेक।। 12।।

रामोॅ केॅ नैं लोभ राज के,
जानै सकल जहान।
राज-काज मन सें त्यागी केॅ,
बनलै भरत महान। 13।।

चौदह बरस बिताय अयोध्या,
लौटे जब श्री राम।
सब सें पहिनें कैकेयी सें,
मिलै दया के धाम।। 14।।

राम कहै हे माता तोहीं
सफल बनैल्हेॅ जन्म।
मोल चुकाना संभव नैं छै,
करी यत्न आजन्म।। 16।।

हाथ तुरत कैकेयी जोड़ै
"मेरा कुछ अरमान।
पूरा कर तुम दिखलाओगे,
ऐसा है अनुमान।। 16।।

कहने से पहले लेकिन तुम,
शर्त्त करो हे राम।
तब मैं बतलाऊँगी तुमको,
मेरा जो है काम।" ।। 17।।

राम गिरै गोड़ों पर ठाम्हैं,
'बतलाबोॅ तों काम।
स्वर्ग - धरा केॅ एक बनैतै,
तोरा लेली राम।।" ।। 18।।

कैकेयी माता नम्र भाव सें,
बोलें 'मेरा काम।
भरत लाल से माँ कहला दो,
हे पुरूषोत्तम राम'।। 19।।

राम मिलै जब भरत लाल केॅ,
कहै 'कहूँ इक बात।
पहले शर्त्त करो कुछ भाई?
बोलूँगा पश्चात।। 20।।

खाड़ो ँ होलै कान भरत के,
विह्वल तोड़ै मौन।
'हे भाई अब शीघ्र बतायें,
पड़ी समस्या कौन।। 21।।

जीवन भी अर्पणा कर दूँगा,
जरा नहीं संदेह।
पुरूषोत्तम श्री रामचन्द्र से,
अलग कहाँ अब नेह।। 22।।

शर्त्त करूँ अपवाद मगर है,
इक छोटी सी बात।
कैकेयी को माँ कहने की,
हठ ना करना तात"।। 23।।

राम भरत के ँ देखी - देखी,
बोलै छै मुस्काय।
'माता को माता कहने में,
कहाँ कष्ट है भाय।। 24।।

जन्म दिया माता ने सबको,
बहुत उठाया कष्ट।
माता से बढ़कर कोई भी,
है नहीं कहूँ स्पष्ट।। 25।।

भरत कहै छै 'जन्म अगर दी,
जननी होगी तात।
माता ममता वाली होती,
यह तो जग विख्यात।। 26।।

ममता जरा नहीं है जिसको,
कैकेयी का रूप।
कैकेयी की जरा न उपमा,
वह तो बनी अनूप'।। 27।।

राम कहै छै 'तुम तो पगले,
सोच रहे हो व्यर्थ।
जननी, माता, माँ सबका तो,
सदा एक है अर्थ।। 28।।

मातु पिता-गुरु के आगे में,
झुकना सबका धर्म।
तुम मर्मज्ञ महाज्ञानी हो,
समझो इसका मर्म।। 29।।

रामोॅ के आगू मेॅ झकलै,
भरत ज्ञान-भंडार।
भाई हो तो भरत सरीखे,
जानै छै संसार।। 30।।

❖❖❖

हीरा प्रसाद 'हरेन्द्र' : एक परिचय

जन्म : 06/09/1950, कटहरा, सुलतानगंज, (भागलपुर)

सम्मान/पुरस्कार/उपाधि :

1. डॉ० अम्बेदकर फेलोशिप, राष्ट्रीय सम्मान (05/12/2001)
(दलित साहित्य अकादमी, दिल्ली)
2. खूब लाल महतो स्मृति पुरस्कार (उत्तंग हमरों अंग लेली)
(अ० भा० अंगिका साहित्य कला मंच) (09/06/2001)
3. जगदीश पाठक मधुकर-कुल विभाकर (05/05/2002)
(समय साहित्य सम्मेलन, पुनसिया, बाँका)
4. इन्दिरा देवी स्मृति सम्मान (12/08/2003) (बरियारपुर, मुंगेर)
5. जनार्दन बाबू रजत स्मृति सम्मान (08-09/11/2003)
(अ० भा० अंगिका साहित्य कला मंच, खगड़िया)
6. पंडित गोपी नाथ तिवारी पुरस्कार (25/12/2005)
जाह्नवी अंगिका संस्कृति संस्थान, पटना
7. सरला स्मृति साहित्यकार सम्मान (अंगप्रिया के सफल सम्पादन लेली)
जानकीपुर पबई (बाँका) (09/12/2007)
8. गोपाल प्रसाद सिंह सेवा निवृत प्र० अ० स्मृति सम्मान
(बाबा दूबे भयहरण स्थान सलेमपुर, अमरपुर (बाँका) 8 मार्च 2008)
9. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र रजत स्मृति सम्मान ('ठकहरा' लेली) (15/06/2008)
(हिन्दी भाषा साहित्य परिषद्, खगड़िया)
10. पंडित जगदीश पाठक मधुकर, काव्य साहित्य साधना स्मृति सम्मान
(भागलपुर प्रमण्डलीय अ० भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन)
11. स्व० वैकुण्ठ विहारी स्मृति सम्मान (तारापुर, मुंगेर)
12. राहुल सांकृत्यायण स्मृति सम्मान (21 फरवरी 2010)
अन्तर्राज्य सद्भावना बहु-भाषी काव्योत्सव, उधाडीह, भागलपुर
13. आदिकवि सरहपा स्मृति सम्मान (11 अप्रैल 2010)
अ.भा. अंगिका साहित्य कला मंच सरहपापुरम् कहलगाँव
14. जय प्रकाश मोदी स्मृति सम्मान (14 मार्च 2011)
15. सीताराम सिंह स्मृति सम्मान (28 अप्रैल 2012) गुलनी कुशाहा, बाँका

16. अवध भूषण मिश्र स्मृति सम्मान (3 अगस्त 2012) चौक बाजार, मुंगेर
17. भगीरथ बाबा अंग साहित्य सम्मान। 01.02.2014, अखिल भारतीय अंगिका साहित्य विकास समिति
18. महताब अली रजत स्मृति सम्मान। 09.03.2014
19. उमानाथ पाठक स्मृति सम्मान। 30.03.2014
    अजगवी नाथ साहित्य मंच, सुल्तानगंज
20. बाबा बिसु राउत स्मृति सम्मान। 12.03.2014
    बाबा बिसु राउत इन्टर कॉलेज, चौसा (मधेपुरा)
21. श्री राम स्मृति सम्मान। 14.05.2017 गालीमपुर, अमरपुर (बाँका)
1. कवि रत्न (विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ)
2. अंग श्री (अ० भा० भाषा साहित्य सम्मेलन प्रमंडलीय शाखा, भागलपुर)
3. अंग श्री (क्षेत्रीय सर्वभाषा कवि सम्मेलन, खड़िया, मुंगेर)
4. साहित्य श्री (अ० भा० साहित्य सम्मेलन भोपाल)
5. साहित्य रत्न (मंगनी लाल स्मृति ट्रस्ट, बौंसी, बाँका)
6. अंग शिरोमणि (राज्य स्तरीय सर्व भाषा सद्भावना काव्योत्सव, उधाडीह, भागलपुर।
7. कवि शिरोमणि (विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, गाँधीनगर, ईशीपुर, भगलपुर)
8. हास्य शिरोमणि (महादेवपुर, अमरपुर, बाँका)
9. पंचशील शिरोमणि (पंचशील चैरिटेबुल सोसायटी, 25/4 कड़कड दुम्म एरिया, सेंट्रल बैंक के ऊपर, नई दिल्ली 110092-भारत)
10. अंग विभूति (राजकीय बुनियादी म० वि० गुल्नी कुशाहा, बाँका।
11. साहित्य गौरव (अजगैवीनाथधाम सुल्तानगंज।
12. अंग-पतंग (अ०भा० अंगिका साहित्य सम्मेलन, जिला शाखा-भागलपुर
13. अंगिका सपूत (अ०भा० अंगिका साहित्य कला मंच प्रखण्ड शाखा-शंभुगंज)
11. महाकवि - (विक्रमशिला हिन्दी विद्या पीठ)

प्रशस्ति (ढेर साहित्यिक संस्थाओं द्वारा)

देश विदेश के स्तरीय पत्रिका में रचना प्रकाशित आरू आकाशवाणी भागलपुर तथा दूरदर्शन पटना से अंगिका आरु हिन्दी रचना संप्रसारित

शैली-विसंगति में हास्य खोजी कें व्यंग्य प्रहार करना।

महामंत्री-अखिल भारतीय अंगिका साहित्य कला मंच।

सम्प्रति-सम्पादक-मंजिल/अंगप्रिया/देवायतन

सम्पर्क - ग्राम+पोस्ट-कटहरा, सुलतानगंज (भागलपुर) - 813213

मो० - 9931854246

निष्कलंकिनी / हरेन्द्र

हीरा प्रसाद 'हरेन्द्र'
कृति

1. उत्तंग हमरो अंग (अंगिका काव्य संकलन)
   भा०वि०वि० पाठ्यक्रम में
2. संस्मरण चक्र (हिन्दी संस्मरण)
3. उद्वेलित उद्‌गार (हिन्दी काव्य संकलन)
4. बहिष्कार (अंगिका एकांकी)
5. सोना के दाँत (अंगिका काव्य संकलन)
6. ठकहरा (अंगिका एकांकी)
7. के करतै तकरार (अंगिका गजल संग्रह)
8. राधा (अंगिका प्रबंध काव्य)
9. तिलकामाँझी (अंगिका महाकाव्य)
10. शंबूक (अंगिका खण्ड काव्य)
11. धन्नू बाबा (अंगिका प्रबंध काव्य)
    नई बात दैनिक में धारावाहिक प्रकाशित
12. भावांजलि (कुण्डलिया और दोहे संकलन)
13. स्वावलम्बी बालिकाएँ (हिन्दी एकांकी संग्रह)
14. कारूदास (लोकगाथा पर आधृत उपन्यास)
15. निष्कलंकिनी (अंगिका खण्ड काव्य)